International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(3): 293-294

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(3): 293-294
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 23-03-2017
Accepted: 24-04-2017

डा0 सन्ध्या त्रिपाठी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर संस्कृत विभाग,
सेन्ट एण्ड्रयूज पी0जी0 कालेज,
गोरखपुर, उ0प्र0, भारत।

Correspondence
डा0 सन्ध्या त्रिपाठी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर संस्कृत विभाग,
सेन्ट एण्ड्रयूज पी0जी0 कालेज,
गोरखपुर, उ0प्र0, भारत।

अभिज्ञान शाकुन्तलम में दार्शनिक तत्व विवेचन–प्रमाण के विशेष सन्दर्भ में

डा0 सन्ध्या त्रिपाठी

प्रस्तावना

प्रमाण प्र. उपसर्ग पूर्वक मा धातु में ल्युट (अन) प्रत्यय करण अर्थ में प्रयुक्त होकर प्रमाण शब्द निष्पन्न होता है।

प्रमाणादि गौतम के न्याय का पहला सूत्र है प्रमाणादि के तत्वज्ञान से निःश्रेयस की प्राप्ति होती है।[1]

प्रमेय सिद्धि प्रमाणाद्धिः ज्ञेय पदार्थ की सिद्धि प्रमाणों के ही द्वारा होती है।

प्रमाणकरणं प्रमाणं–प्रमा के साधन को प्रमाण कहते है। यथार्थानुभवः प्रमा।[2]

प्रमाण के निर्वचन से प्रमा के प्रति कारणत्व सूचित होता है, असंदिग्ध, अविपरित तथा पहले से अज्ञात विषय वाली चितवृत्ति ही प्रमाण है, इसके द्वारा पुरुष को प्राप्त होने वाला ज्ञान प्रमा है जो कि प्रमाण का फल है।

तच्चअसंदिग्धाविपरितानधिगतविषयचित्तवृत्ति[3]

वेदान्तमतानुसार ब्रहम का एकमात्र ज्ञान आगम (वेदान्तोनापनिषत्प्रमाण– वेदान्तसार)[4] प्रमाण के द्वारा होता है। इसके अनुसार यह वाक्य प्रमाण है जिसके वाक्य के तात्पर्य का विषय होने वाला संसर्ग अन्य प्रमाणों से बाधित नहीं होता, यद्यपि वेदान्त सम्मत प्रमाण 6 हैं – प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, आगम, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि।

शंकराचार्य का कथन है– श्रुति प्रदीप के समान सत्य का प्रकाशन करती है। वेदान्तियों के अनुसार– पौरुषेय लौकिक तथा अपौरुषेय वैदिक वाक्य है वेद एवं श्रुतिवचन अपौरुषय शब्द प्रमाण की कोटि मे आते हैं।

वस्तुतः कालिदास का वाक्य श्रुति सम्मत पौरुषेय शब्द प्रमाण की कोटि में आता है।

कालिदास स्मृतिकारों के द्वारा निर्दिष्ट कर्तव्य के समर्थक हैं उन पर सांख्य एवं योग दर्शन का प्रभाव है।

कालिदास ईश्वर तत्व की मीमांसा के लिये अवसर पर सांख्य तथा उपनिषद के द्वारा विशेष प्रभावित दृष्टिगोचर होते हैं, भगवान को कालिदास जब पुरुष के अर्थ में प्रवृत्त करने वाली प्रकृति और उस प्रकृति के द्रष्टा उदासीन पुरुष भी मानते हैं तब वे सांख्य शैली का आश्रयण करते हैं।
(कुमार सं0 2/13)

वेदान्तेषु यमाहुरेक पुरुष्यं वाली नान्दी में वेदान्त शब्द का प्रयोग उपनिषद अर्थ में करते हैं।[5] आगमों के द्वारा प्रतिपादित सिद्धि प्राप्ति के मार्ग भले ही भिन्न–भिन्न हों, परन्तु वे समस्त मार्ग तुम्हारे ही पास पहुँचते हैं जिस प्रकार गंगा का जल समुद्र में।

बहुधाप्यागमैर्भिनाः पन्थानः सिद्धि हेतवः
त्वमेव निपतत्योधा जाहनवीया इवार्णवे।[6]

कालिदास योग के बड़े पक्षपाती हैं, उनका कहना है–

योगिनो ये विचिक्वैन्ति क्षेत्राभ्यन्तरवर्हिनम्
अनावृत्ति भये यस्य पदमाहुर्मनीषिणः।[7]

महाकवि कालिदास अपने ग्रन्थ शाकुन्तल के नान्दी श्लोक में ही प्रत्यक्ष प्रमाण का आश्रय लेकर शिव की अष्ट मूर्तियों का प्रतिपादन करते हैं। अर्थात् शिव की अष्ट मूर्तियां प्रत्यक्ष हैं जो कि प्रत्येक मनुष्य को दिखाई दे रही है।

या सृष्टिः स्रष्टुराद्या वहति
विधिहुतं या हविर्या च होत्री
ये द्वे कालं विधतः श्रुतिविषयगुणा
या स्थिता व्याप्य विश्वम्।।
यामाहुः सर्ववीजप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः
प्रत्यक्षाभि प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः।।[8]

इसी प्रकार कालिदास को शाकुन्तलम् का नायक जब आश्रम में प्रविष्ट होता है तथ मुनि कन्या शकुन्तला का दर्शन करके उसके प्रति अभिलाषित होता है उस समय उसका मन संशययुक्त है, इसके समाधान के लिये महाकवि ने स्वयं दुष्यन्त के अन्तःकरण को प्रमाण के रूप में उपस्थित किया है–

असंशयम् क्षत्रपरिग्रह क्षमा यदार्यमस्यामभिलाषि मे मना
सतां ही सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तः करणप्रवृतय।[9]

अर्थात् यह संशय रहित है कि यह कन्या शकुन्तला क्षत्रिय के परिग्रहण योग्य होगी तभी तो मेरा श्रेष्ठ मन इसकी अभिलाषा कर रहा क्योंकि सज्जनों का अन्तःकरण ही संदेहास्पद वस्तुओं में प्रमाण होता है। अतः दुष्यन्त को अन्तःकरण के प्रमाण द्वारा सन्देह निवारण कराकर कवि ने प्रमाण को परिलक्षित किया है। पंचम अंक में शकुन्तला को राजा जब पहचानने से विमुख हो जाता है तब शकुन्तला प्रमाण स्वरूप अंगूठी का दर्शन कराना चाहती है–

भवतु यदि परमार्थतः परपरिग्रहशंकिना त्वयैवं वक्तुं
प्रवृतं तदभिज्ञानेनानेन तवाशंकामपनेख्यामि ।[10]

क्योंकि राजा का दिया हुआ अभिज्ञान यहाँ प्रत्यक्ष प्रमाण का कार्य करता जिसके दर्शन से राजा की विस्मृति दूर हो जाती और उसका संदिग्धत्व भी दूर हो जाता क्योंकि प्रमाण असंदिग्ध ज्ञान का ही नाम है।

इसी प्रकार शकुन्तला का प्रमाण प्रस्तुत करते हुए महाकवि ने यह भी प्रदर्शित किया है कि 'अज्ञत हृदयेषु सौहृदयम्' कष्टदायक होता है, अतएव इस प्रमाण को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक अज्ञात हृदय के साथ विवाहादि मैत्री सम्बन्ध का कवि ने दुष्परिणाम दिखलाया है जिसके अनुशीलन की आज महती आवश्यकता है।

आ जन्मनः शाठ्यमाशिक्षितो यः
स्तस्या प्रमाणं वचने जनस्य
परातिसन्धानंधीयते यै–
विद्येति ते सन्तु किलाप्तवाचः[11]

अर्थात् जिस भोली तपस्वी कन्या शकुन्तला ने जिसने धूर्तता का नाम भी नहीं जाना उसका वाक्य अप्रामाणिक है और जिनको जन्म से ही शठता की शिक्षा दी जाती है वे आप्त पुरुष हैं।

उनका वाक्य निश्चित रूप से आप्त वाक्य है। इस प्रकार महाकवि ने अपने ग्रन्थ में सर्वत्र प्रमाणों का विवेचन किया है जिसके आधार पर यह स्पष्ट हो जाता है कवि को प्रमाण प्रस्तुत करना अभिधेय है।

सारांशतः यह कहा जा सकता है कि प्रस्तुत शोध पत्र में मूल ग्रन्थ शाकुन्तलम् को आधार बनाया गया है तथा साथ ही कुछ समीक्षा ग्रन्थों का भी सन्दर्भ प्रस्तुत किया गया है। जिसके आधार पर महाकवि कालिदास के दार्शनिक होने की बात पुष्ट हो जाती है।

इस प्रकार प्रमाण ज्ञान के सन्दर्भ में महाकवि कालिदास का **यथार्थानुभवः** परिलक्षित होता है जो प्रमा का साक्षात्करण है जिसके द्वारा हम इस तथ्य को प्रमाणित करते हैं कि कालिदास के शाकुन्तलम् में प्रमाणों का उत्कृष्ट निदर्शन हुआ है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. तर्क भाषा – केशव मिश्र
2. तर्क भाषा–केशव मिश्र
3. सांख्यतत्व कौमुदी – आचार्य वाचस्पति मिश्र
4. वेदान्तसार – कृष्णकान्त त्रिपाठी
5. संस्कृत साहित्य का इतिहास – डा0 विजपाल सिंह
6. संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास – आचार्य बलदेव उपाध्याय
7. संस्कृत साहित्य का इतिहास–आचार्य बलदेव उपाध्याय
8. अभिज्ञान शाकुन्तलम नान्दी कालिदास
9. अभिज्ञान शाकुन्तलम प्रथम अंक
10. अभिज्ञान शाकुन्तलम पंचम अंक
11. अभिज्ञान शाकुन्तलम पंचम अंक